86

सावधान दक्ष !

मा. द. बा. ठेंगड़ी

माननीय दतोपंन्त ठेंगड़ी जी

दिनांक 26 जनवरी, 1992

स्वयंसेवकों के बीच समारोप भाषण

आदरणीय सर कार्यवाह जी, शेषाद्रि जी, माननीय प्रान्त संघ चालक कालीदा, माननीय प्रान्त कार्यवाह सुनील दा, माननीय सह सरकार्यवाह जी सुदर्शन जी, स्वयं सेवक बंधुओं ।

मुझे आदेश हुआ है कि इस समय अर्थात् आज विदाई वेला पर समारोप के रूप में कुछ कहूं । मैं सार्वजनिक जीवन में बहुत साल से कार्यरत हूं औद्योगिक क्षेत्र में ऐसा माना जाता है कि कई उद्योगों के अपने अपने व्यवसायिक रोग होते हैं । हमारे भी सार्वजनिक जीवन का एक व्यवसायिक रोग है । और वह रोग है कि एक बार बोलने के लिए मुंह खोलते हैं तो दो तीन घंटा तक मुंह बन्द नहीं होता । मैं भी इस रोग से पीड़ित हूं । यहां आने के पहले क्या बोलना है, क्या नहीं बोलना है इस विषय में मन में विचार करके भी आया हूं । किन्तु यहां आने के पश्चात मैं अपने को ठीक ढंग से बोलने में असमर्थ पा रहा हूं ।

अभी हमारे हावड़ा महानगर संघ चालक जी ने गीत गाया—'आज विदाई

शेष काले सकलेर बोलि–हिन्दू के जागाओं'––हावड़ा के प्रथम प्रचारक, जिनको हम प्यार से सागर दा कहते हैं—पांडुरंग क्षीर सागर का तैयार किया हुआ यह गीत हमें उनका स्मरण कराता है ।

इसके पूर्व कई गान हुए––' धनधान्ये पुष्पे भरा...' हम सब जानते हैं कि परम पूजनीय डाक्टर जी को यह गीत बहुत पसन्द था ।

इसके पूर्व कुछ केसेटों का विमोचन हुआ जिसमें संस्कार भारती द्वारा एवं साथमें स्व. केशव बाबू के रचित गीतों का कैसेट, जिनको मैं अपने गुरु के समान मानता हूं । हमारा शिविर प्रारंभ होते ही हमको शोक देने वाला समाचार मिला कि हम सबके प्रिय शिबू दा भी हमको छोड़ कर गये ।

हमने इस शिविर में प्रवेश किया। आते समय सामने देखा– केन्द्रीय नगर–रामप्रसाद दास नगर । वह हम सबके प्रिय कार्यकर्ता थे ।

इन सारे दृश्यों के परिणाम स्वरूप मेरी मनःस्थिति विचलित हुई है। मेरे जैसा और कोई भी होता तो उसकी भी मनःस्थिति विचलित हो जाती, यह आप समझ सकते हैं। यह बड़ा भव्य शिविर है। मुझे स्मरण है कि 45 साल पहले बंगाल के किसी भी क्षेत्र में 20–25 लोगों को तैयार करना बहुत कठिन था । खून पसीना एक करना पड़ता था और आज यहां हजारों स्वयं सेवकों को हम देख रहे हैं । आज यह सारी व्यवस्था, इतना बड़ा मैदान हम देख रहे हैं । मुझे स्मरण है कि उन दिनों में सामान्य शाखा लगाने के लिए भी मैदान मिलने में कठिनाई होती थी बहुत बार झगड़े भी करने पड़ते थे । कई सज्जन मारपीट भी करते थे । अपने स्वयं सेवक इन सब बातों के लिए तैयार रहते हैं। लेकिन शाखा के लिए छोटा सा मैदान प्राप्त करने में इतनी मेहनत करनी पड़ती थी और आज इतना विराट मैदान हम देख रहे हैं । यह विरोधाभास है ।

इतना बढ़ता हुआ विशाल जन समर्थन रा. स्व. संघ को मिल रहा है इसका परिचय इस दृश्य से मिलता है । मैं जानता हूं कि अपने संस्कार विहीन हिन्दू समाज की तरह जो एक बड़ा कार्य सम्पन्न होने के बाद संतुष्ट होकर बैठ जाता है, उस तरह आत्म संतुष्ट होकर बैठने वाला अपना स्वयंसेवक

नहीं है । इतिहास हमें यह बताता है कि अच्छी उपलब्धि प्राप्त होने के पश्चात् आत्म संतुष्ट होकर पराक्रमी पुरुष के आराम करने की बात सोचने से कितनी बड़ी विपत्ति आती है ।

1857 का स्वतंत्रता संग्राम चल रहा था । झांसी की रानी त्यात्याँ टोपे आदि सब क्रान्तिकारी वीरों की सेना ने ग्वालियर का बड़ा किला जीत लिया था । ग्वालियर के दुर्ग को दिल्ली का महाद्वार कहा जाता था । वहां दुर्ग जीतने के बाद दो तरह के भाव लोगों के मन में आये । झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने कहा–ग्वालियर जीत लिया मगर सर ह्यूरोज अपनी सेना के साथ हमारे पीछे है इस कारण हमें एक क्षण भी विश्राम किये बिना दिल्ली के लिए कूच करना चाहिए । दिल्ली का किला हमारे हाथ में आना चाहिए। किन्तु उस समय कुछ लोगों ने इतनी जल्दीबाजी न करके 3–4 दिन विश्राम करने का सुझाव दिया । इतिहास बताता है कि झांसी की रानी के आदेश के अनुसार यदि तुरन्त दिल्ली कूच किया जाता तो हिन्दुस्तान का इतिहास बदल जाता।

किन्तु 2–3 दिन तक आत्म संतुष्ट होकर ग्वालियर के किले में आराम किया तो अंग्रेजों ने फिर से अपनी शक्ति समेट कर किलेंबन्दी कर दी और 1857 में नजदीक आई विजय हमारे हाथ से निकल गई । यह इतिहास हम जानते हैं ।

संघ के स्वयंसेवक आराम करने के पक्ष में नहीं रहते । बड़ी उपलब्धि के पश्चात आत्म संतुष्ट होकर बैठने से हाथ में आई विजय निकल जाती है । यह जानने के कारण इतना बड़ा सफल शिविर करके विश्राम की बात किसी के मन में नहीं आयेगी, बल्कि यहां से जाने के बाद द्विगुणित उत्साह से संघ के कार्य में लगेंगे । यह मैं जानता हूं। यही स्वयं सेवक की विशेषता है । यह तो होगा ही । किन्तु इस विशाल शिविर को देख कर पुराने दिनों की याद आती है । मन कुछ भावुक हो आता है । यह शिविर परम पूजनीय सर संघचालक जी की उपस्थिति में हो यह हम सभी की स्वाभाविक इच्छा थी । इस कारण उन दिनों में मैं भी दो बार नागपुर गया था । परम पूजनीय बाला साहब की शारीरिक अवस्था बहुत ही खराब है यह मैंने वहां भी देखा था और आप सब यहां भी देख रहे हैं । सब डाक्टरों ने भी यह स्पष्ट कहा था कि किसी भी तरह का कष्ट आपके जीवन के लिए खतरनाक हो सकता

है । किन्तु यह खतरा मोल लेकर डाक्टरों की सलाह के विपरीत परम पूजनीय सर संघचालक जी हमारे बीच में पूरा समय उपस्थित रहे । इतना ही नहीं, तो हम स्वयंसेवकों को इस संक्रमण काल में अपने देश को और सम्पूर्ण विश्व को मार्गदर्शन करने वाला भाषण भी दिया। उनकी इस नाजुक अवस्था में भी खतरा उठा कर वे यहां आये उनकी इस मानसिकता के कारण सभी के मन में वर्णनातीत भावों का संचार हुआ है ।

इस शिविर की योजना जिन्होंने बनाई वे बहुत दूरदर्शी हैं । ऐसा किसी को भी प्रतीत हो सकता है । विश्व विख्यात सच्चे स्वातंत्र्य सेनानी–(समाचारपत्रों द्वारा ख्याति प्राप्ति सेनानी नहीं, बल्कि सही अर्थों में स्वतंत्रता सेनानी) जिन्होंने भारत छोड़ने से पूर्व दिलीप राय के साथ बात करते समय यह कहा था कि अब हमें वीर शिवाजी की रणनीति का आलम्बन करना पड़ेगा और जिन्होंने आह्वान किया था कि **"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा,"** उस नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जन्म दिवस पर शिविर का प्रारंभ हुआ ।

एक सन्यासी योद्धा जिन्होंने कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात मनुष्य का निर्माण करना है और वह मनुष्य कैसा होना चाहिए––उसका चित्र दिया

साहसे जे दुःखदैच वाह मृत्यु के जे बाधे बाहु पासे

काल नृत्य कोरे उपयोग मातृ रूपा तारी काछे आसे

साहस पूर्वक जो दैन्य और दुःख मांगे मृत्यु को जो बाहु पाश में बांध ले काल नृत्य का जो आनन्द ले वही मातृभूमि का अधिकारी है ।

ऐसे मनुष्य का निर्माण करने का आह्वान जिस महापुरुष ने किया था ऐसे दृष्टा स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस पर इस शिविर का समारोप हो रहा है । इस समाप्ति समारोह की विशेषता इसको एक ऐतिहासिक मुहूर्त बनाती है । अभी माननीय काली दा एवं आदरणीय शेषाद्रि जी ने आपको शुभ संवाद दिया है । डाक्टर मुरली मनोहर जोशी जी ने आज प्रातः 8.30 बजे श्रीनगर के लाल चौक में तिरंगा लहराया। श्रीनगर की कश्मीर घाटी में सरकार हतप्रभ हो गई । भारत सरकार की क्षमता नहीं थी ऐसा नहीं है । क्षमता तो बहुत है मगर इच्छा शक्ति के अभाव से हतप्रभ हुई । जहां भारत सरकार के पास

ोना, क्षमता है सब कुछ है मगर इच्छा शक्ति के अभाव में हतप्रभ हुई वहां हमारे डाक्टर मुरली मनोहरजी ने तिरंगा लहराया। यह इतिहास को मोड़ देने वाली ऐतिहासिक घटना है । यह सुखद संवाद मैं सुन रहा था तो दो बातें एक साथ मेरे मन में आई ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वयं अपने को संस्था नहीं समझता, पंथ नहीं समझता, संप्रदाय नहीं समझता । संघ समाज के अन्तर्गत संगठन खड़ा नहीं करना चाहता बल्कि सम्पूर्ण समाज को ही संगठित करना चाहता है और इसके कारण संघ और सम्पूर्ण हिन्दू समाज एकात्म है । इस कारण संघ कभी भी किसी भी बात का श्रेय नहीं लेता यह पहली बात मेरे मन में आई । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ शुरू होने के लगभग दो साल बाद नागपुर में मुसलमानों का दंगा हुआ । समाज हमेशा की तरह असंगठित था । किन्तु दो साल में डाक्टर जी के प्रयास से जो युवक स्वयं सेवकों का संगठन खड़ा हुआ तो उस कारण स्वयं सेवकों के नेतृत्व में कई साहसी लोग सम्पर्क में आये । आक्रमणकारियों का सफल प्रतिकार किया और जो पीड़ित थे, हिन्दू या मुसलमान जो भी पीड़ित थे, उन सबकी रक्षा की । अब तक जहां जहां मुसलमानों के दंगे हुए वहां वहां हिन्दू मार खाते रहे थे । पहली बार दंगई मुसलमानों को मार खानी पड़ी। ऐसा 1927 का इतिहास है। इस घटना के कारण देश के सभी हिन्दुत्व निष्ठ लोगों को बहुत आनंद हुआ और जगह जगह पू0 डाक्टर जी के साथ बात करते समय वे कहते थे कि आपके संघ ने बहुत पराक्रम का काम किया । परम पूजनीय डाक्टर जी कहते थे--यह कार्य संघ ने नहीं किया हिन्दू समाज ने किया । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा सामर्थ्यशाली हुए हिन्दू समाज ने यह कार्य किया । चूंकि संघ कोई पंथ नहीं, समाज नहीं, सम्पूर्ण हिन्दू राष्ट्र है । सम्पूर्ण हिन्दू समाज अर्थात् संघ है जो कुछ भी होता है वह हिन्दू समाज के द्वारा होता है । संघ कोई श्रेय सूची नहीं बनाता । उपलब्धियों का रिकार्ड तैयार करनेवाली अन्य संस्थानों की पद्धति यहां नहीं है । सब कुछ समाज ने ही किया है ।

हमारी प्रार्थना में ध्येय रखा गया । "परम वैभवनैतुमे तत्स्वराष्ट्रं" इस राष्ट्र को परमवैभव प्राप्त करा देना यह हमारा लक्ष्य है । परन्तु हमारे किसी भी परम पूज्य सर संघचालक ने इतनी शक्ति संघ के पास होते हुए भी (आज

भी हमारे पास पर्याप्त शक्ति नहीं है हमको और कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है तब भी आज यह विश्व का सबसे शक्तिशाली संगठन है तब भी) यह नहीं कहा कि संघ यह करके दिखायेगा । हमेशा यही कहा कि संघ के द्वारा शक्तिशाली हुआ हिन्दू समाज सब करेगा । यही हम कहते हैं । इसके साथ ही दूसरी एक बात भी मेरे मन में आती है। पूना में अरूण वैद्यकी हत्या हुई थी। उनके दाह संस्कार के बाद श्मशान भूमि में कुछ भाषण हुए। जनरल वैद्यको श्रद्धांजलियां अर्पित की गई। वक्ताओं ने उनके कई गुणों और योग्यताओं का वर्णन किया । किन्तु मेरे एक आर्मी आफिसर मित्र ने बादमें मुझे बताया कि उनको तृप्ति नहीं हुई । हालांकि उनकी प्रशंसा में बहुत कुछ कहा गया था । उन्होंने बताया कि सेना में कोई किसी भी पद पर हो प्लाटून कमांडर हो, लांस नायक हो, ब्रिगेडियर हो या फिर फील्ड मार्शल ही क्यों न हो ये उसकी योग्यतायें तो हैं, मगर सबसे ऊंची और सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यही मानी जाती है कि "वह एक अच्छा सैनिक था" ।

संघ के स्वयंसेवक प्रत्यक्ष संघकार्यमें कार्य कर रहे हों या संघ की प्रेरणा से एवं योजना से राष्ट्र जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हों सभी क्षेत्रों में उनके गुणों एवं योग्यता के कारण जो मान्यता मिलती है– अधिकार प्राप्त करते हैं तब भी उन सबकी धारणा यही है कि उनका सबसे बड़ा गुण उनका स्वयंसेवकत्व ही है । उनके लिए सबसे बड़ा सम्मान यही है कि वह एक अच्छा स्वयं सेवक है । डाक्टर मुरली मनोहर जोशी जिन्होंने आज 8.30 बजे श्रीनगर के लाल चौक में तिरंगा लहराने का ऐतिहासिक कार्य किया है उनकी अनेक विशेषतायें और अनेक गुण हैं। एक अच्छे वैज्ञानिक, एक अच्छे शिक्षाशास्त्री, एक प्रभावी प्राध्यापक के नाते लोगों ने उनका लोहा पहले ही मान लिया है । राजनैतिक क्षेत्र में भाजपा के अध्यक्ष के नाते उनका महत्वपूर्ण स्थान है और आज भारतीय जनतापार्टी का प्रभाव भी बढ़ रहा है । भाजपा के साथ साथ जोशी जी का प्रभाव और लोहा अन्य राजनैतिक नेता मानते हैं। किन्तु स्वयं डाक्टर मुरली मनोहर जोशी, जिनकी मानसिकता मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूं और कोई भी उनसे बात करके समझ सकता, कि उनकी मानसिकता यही है कि मैं जीवन में कुछ भी बड़ा काम करूं, किसी भी पदपर रहूं मेरे लिए सबसे श्रेयस्कर बात यही है कि जीवन के अंतकाल तक मेरे बारे में यह कहा जाये कि मैं एक प्रामाणिक स्वयंसेवक था । ऐसे डाक्टर मुरली मनोहर

जोशी ने जब यह तिरंगा लहराया उसी समय हमारे इस शिविर का समारोप हो रहा है । मुझे ऐसा लगता है कि शिविर के आयोजकों की दूरदर्शिता एवं योजना कौशल के कारण और कुछ नियति के विधान के कारण बहुत अच्छे मुहुर्त पर शिविर का आयोजन हुआ है–ऐसा स्पष्ट है ।

आज के इस अवसर पर कुछ बोलने लायक रह गया है, ऐसा मुझे नहीं लगता । परम पूजनीय सर संघचालक जी का स्वयं सेवकों के लिए, दूरदर्शिता पूर्ण संदेश हमने ग्रहण किया । उसी तरह का आज की परिस्थिति का वैज्ञानिक तर्कपूर्ण विश्लेषण राष्ट्र के लिए भविष्य का दिशा दर्शन हमने आदरणीय शेषाद्रि से पाया । आज जिस तरह विशुद्ध भौतिकतावाद पर आधारित दोनों विचारधारायें असफल हुई है, हो रही हैं, शेष होने के रास्ते पर है, पश्चिम में भी तीसरे विकल्प की खोज चल रही है। इसे तीसरा विकल्प कहना भी गलत है। वास्तव में मानव जाति के लिए एकमात्र विकल्प हिन्दुत्व ही हो सकता है–यह हमने इमारे माननीय सर कार्यवाह जी सुदर्शन जी के मुख से सुना । इसके पश्चात् और बोलने लायक कुछ बचता है, ऐसा मुझे लगता नही है। पिछले कई वर्षो में पिछले कई दशको में वर्तमान व भविष्य में होने वाली घटनाओ की सूचना देने वाली कई बाते हुई है। मैं विस्तृत विवेचन की आवश्यकता नही समझता। कुछ घटनाओ का उल्लेख मात्र पर्याप्त होगा।

द्वितीय महायुद्ध के अंतिम चरण में जो भयानक आणविक विस्फोट हुआ जिसके कारण हिरोशिमा और नागासाकी (जापान) मे सारी गड़बड़ हो गई। वह बहुत क्रान्तिकारी घटना मानी गई। यह विस्फोट सफलता पूर्वक करने वाले वैज्ञानिक का नाम था रोबर्ट ओपन हायमर। उन्होने अपने डायरी में लिखा है कि "मैं दूर से देख रहा था कि मेरा प्रयोग सफल होता है या असफल। इससे पूर्व मेरे कई प्रयोग असफल हो चुके थे। मुझे डर था कि शायद मेरा वह प्रयोग भी असफल होगा। मैं दूर से देख रहा था। अचानक जब अणु का विस्फोट योजनानुसार हुआ। वह प्रकाश मैने देखा तो मेरे मुंह से स्वाभाविक रूप से यह पंक्तियां निकली–I am death - the shelter of the world. "कालोऽस्मि लोकक्षय कृत्प्रवृद्धो" का अंग्रेजी भाषान्तर है। गीता एवं गीता का अंग्रेजी भाषान्तर उनको कंठस्थ था। उन्होने लिखा है कि वह महाप्रकाश देखकर स्वाभाविक रूप से मेरे मुंह से निकला– **I am death - the shelter of the world.**

विज्ञान का कोई वचन उनके मुह में न आना, बाइबिल का कोई वचन उनके मुह मे न आना–हालांकि वे एक निष्ठावान ईसाई थे–गीता का यह वाक्य उस समय उनके मुँह से आ जाना एक सूचक बात है जिसका विश्लेषण हम अभी नही करते।

इसी तरह की दूसरी घटना मन में आती है। स्टालिन का नाम रूस के तानाशाह एवं प्रबल सत्ताधीश के नाते हमारे सामने आता है। उनकी लड़की स्वेतलाना से एक संवाददाता ने पूछा "आपकी अब इच्छा क्या है? अगला जीवन किस प्रकार बिताना चाहती है?" स्वेतलाना ने कहा कि मैं गंगाजी के किनारे कुटिया बनाकर मनःशान्ति के साथ जीवन बिताना चाहती हूँ। महासत्ताधीश स्टालिन की पुत्री ने यह इच्छा प्रकट की।

तीसरी घटना मन में आती है। पूँजीवाद का प्रारंभ अमेरिका में हुआ उस समय जो पहले और शिखर पूंजीपति थे उनमे हेनरी फोर्ड का नाम आता है। फोर्ड परिवार अभी भी वहां के बड़े पूंजीपतियों में गिना जाता है। आज उनके उतराधकारी है अलफ्रेड फोर्ड–ये उनके परपोते हैं। वे भगवान कृष्ण के भक्त बन गये। वे हिन्दुस्तान में आये थे। यहां कुछ पत्रकारो ने उनको घेर लिया था। यहां के प्रगतिशील लोगों को इस बात का बड़ा दुःख था कि इतना बड़ा अमेरिकन पूंजीपति भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति जैसे दकियानूसी, प्रतिगामी विचार में उलझ गया है। यह दकियानूसी पन, प्रतिगामीपन देखकर यहां के प्रगतिशील पत्रकार उनपर दया करते थे। उन्होने प्रश्न किया कि "आप यदि कृष्ण भक्ति में लग गये तो आपकी सम्पति का क्या होगा?"

फोर्ड ने उत्तर दिया Wealth? Whose wealth? All Wealth belongs to Lord Krishna कलकत्ता के प्रगतिशील पत्रकारो को बड़ा दुःख हुआ।

और एक भाषण का स्मरण आता है। सम्पूर्ण दुनिया के इतिहास का अच्छी तरह से अध्ययन करने वाले एरनार्ड टायनबी की बात मन में आती है। उन्होने अट्ठाइस (28) विश्व संस्कृतियों का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला था वक्तव्य दिया था। उन्होने कहा था कि– " इसके पश्चात् मानवता का मार्ग दर्शन करने का दायित्व भारत को उठाना पड़ेगा। न्यूक्लियर शस्त्रों के भंड़ार के कारण, अन्न की कमी के कारण सारी दुनियां को बचाने का काम केवल भारत कर सकता है।"

उन्होनें कहा कि "आज भारत में तरह तरह के संकट है, आपत्तियाँ है, यह मैं जानता हूँ। मैं यह भी जानता हूँ कि दुनियां मे जितने भी तरह के संघर्ष और विभेद है वे सब तरह के संघर्ष और विभेद भारत में मौजूद है। किन्तु इन सारे संकटो से ग्रस्त होते हुए भी मै यह जानता हूं कि भारत में जो एक बात है वह अन्य किसी भी देश में नही है। भारत को प्रचीन संस्कृति की यह देन मिली है। वह है Unity in the Midst of diversity विविधता के अर्न्तगत बहता हुआ एकात्मता का प्रवाह। उसका साक्षात्कार करने की क्षमता संस्कृति के नाते भारत को प्राप्त हुई है। यह देन और किसी भी देश को प्राप्त नही है। इसलिए मुझे पूरा विश्वास है कि इस सांस्कृतिक देन के कारण इस परम्परागत प्रवाह के कारण भारत अपने समस्त संघर्षो एवं अन्तर्भूत विभेदों पर विजय प्राप्त करेगा। वह एक आदर्श समाज निर्माण करेगा और इस समाज रचना के निर्माण के पश्चात किस तरह विभेदों मे से रचना की जा सकती है–यह भारत से सीखने का अवसर दुनियां को मिलेगा। भारत में विश्व को दिशा देने की क्षमता है। यह बात एरनार्ड टायनबी ने कही।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक, समर्थक एवं विरोधी सभी इस बात को स्वीकार करते है कि इस सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने वाले केवल रा. स्व. संघ के स्वयंसेवक ही है। यह बात समर्थक और विरोधी सभी स्वीकार करते है। इसी कारण अरनार्ड टायनबी जैसे श्रेष्ठ लोगों ने जो अपेक्षा प्रकट की है, इसी तरह की बात निश्चित रूप से होने वाली है। महर्षि अरविन्द जैसे योगियों ने आश्वासन दिया है। महर्षि अरविन्द ने जागती आंखो से स्वप्न देखा है कि हमारी भारत माता विश्व मंच पर शिखर स्थान पर अत्यन्त गौरवशाली मुद्रा में बैठी विश्व मानव कों आश्वस्त कर रही है। भारत का भविष्य निश्चित हैं और यह सब हमें करना है। सोते हुए सिहं के मुह में मृग स्वयं नही जाता। परिश्रम करना पड़ता है। यह ऐतिहासिक दायित्व हमे मिला है। समय ने यह जिम्मेदारी स्वयंसेवको को सौपी है। प्रश्न है कि इतनी बड़ी जिम्मेदारी हम कैसे निभाये ? इसका उत्तर एवं इसका रास्ता 1925 में विजयादशमी के दिन ही परम पूजनीय डाक्टर जी ने हमें बता दिया था। इसका एक मात्र साधन है संघ की शाखा। संघ के सूत्रपात के समय क्या स्थिति थी, हम जानते है। इस धरती पर विजयादशमी 1925 से पूर्व संघ का अस्तित्व नहीं था। डाक्टर हेडगेवार के दिमाग में इस विराट संगठन की संकल्पना अवश्य थी

बाकी धरती के ऊपर और आकाश के नीचे संघ का अस्तित्व नही था। हिन्दुओं की आत्मविस्मृति इस हद तक थी कि अच्छे अच्छे नेता स्वयं को हिन्दू कहाने की बजाय गधा कहलाना उचित समझते थे। यह आत्म विस्मृति नेताओ में आई तो सामान्य जनता में भी आई। हिन्दुत्व की दृष्टि से सम्पूर्ण रूप से अंधकार छाया हुआ था। एक बैठक में एक विद्वान वकील ने जोर से कहा कि "कौन मूर्ख कहता है कि भारत हिन्दू राष्ट्र है" डाक्टर जी ने पूरे विश्वास एवं ओजस्वी स्वर में कहा "मैं केशव बलिराम हेडगेवार कहता हूँ कि भारत हिन्दू राष्ट्र है और तब तक हिन्दू राष्ट्र रहेगा जब तक विश्व में एक भी हिन्दू जीवित है।" उनकी विश्वास भरी वाणी सुनकर पास वाले ने भी कहा कि हां डाक्टर साहब कहते है तो यह हिन्दू राष्ट्र है। ऐसे एक एक स्वीकार करते गये और वह वकील भी बोला कि हां भारत हिन्दू राष्ट्र है।

इस दिव्य स्वप्न को सफल करने का मार्ग भी डाक्टर साहब ने बताया। इसके लिए स्वयंपूर्ण कार्य पद्धति अर्थात शाखा का आविष्कार किया । राष्ट्र को आश्वासन दिया कि इस मार्ग पर चल कर अवश्य परम वैभव आयेगा।

आज हमारे विभिन्न क्षेत्रों में अनेक संगठन चलते हैं। मगर संघ की शाखा सबका आधार है । आज शून्य में से सृष्टि का निर्माण हो रहा है । हजारों शाखाएं हैं, लाखों स्वयंसेवक हैं । राष्ट्र के हर कार्य में स्वयं सेवक सबसे आगे हैं । स्वयं सेवकों के कार्यों की गिनती करना संभव नहीं है । भारत विभाजन के समय की पीड़ा सर्वाधिक स्वयं सेवकों ने झेली और पीड़ित लोगों की सहायता भी की।

कश्मीर का प्रश्न हो, पंजाब का प्रश्न हो, आसाम का प्रसंग हो या तमिलनाडु का–सब स्थानों पर राष्ट्रीय एकात्मता में स्वयं सेवक प्रथम पंक्ति पर खड़ा मिलेगा । हर राष्ट्रीय संकट के समय अपने प्राणों की बाजी लगा कर स्वयंसेवक पहुंच जाता है । इस तरह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का वास्तविक स्वरूप अब लोग समझने लगे हैं । विरोधियों द्वारा फैलाई गई गलतफहमियां स्वतः मिटने लगी हैं ।

अब हमारे कार्य का स्वरूप यही होना चाहिए कि संघ अपने सम्पूर्ण हिन्दू समाज का है। सबको साथ लेकर चलना है । जो जो हिन्दू है, वह

हमारा है, चाहे वह किसी भी मत पंथ का हो किसी भी सम्प्रदाय का हो, या किसी भी राजनैतिक दल का हो सब हमारे हैं । हो सकता है कि आज वे हमारा विरोध कर रहे हों मगर वे जब समझ जायेंगे तब विरोध नहीं रहेगा। आत्म स्वरूप प्रकट होगा तो सब शंकायें मिट जायेंगी । इसी आत्म स्वरूप को भुलाने वाला राजनैतिक (कांग्रेसी) प्रयास स्वतः ध्वस्त होगें ।

कुछ लोग निराशा प्रकट करते हैं उसकी आवश्यकता नही है। झगड़े हो रहे हैं हम मानते है किन्तु जहां आत्म परिचय भूल जाते है वहां झगड़े होना स्वाभाविक है। पर्शिया के इतिहास में लिखा है रूस्तम और सोहराब की घटना आती है। रूस्तम पिता थे सोहराब बेटा था। परस्पर युद्ध हो गया। दोनो एक दूसरे को पहचानते नही थे। रूस्तम के जबरदस्त वार से सोहराब गिर गया। उसके सिर मे से रक्त बहने लगा। सोहराब का पराक्रम देखकर रूस्तम बहुत प्रभावित हो चुका था। इस कारण सोहराब का सिर रूस्तम ने अपनी गोद में लिया। रूस्तम ने पूछा कि तुम कौन हो? सोहराब के सिर मे से खून बह रहा था उसके होश निकल रहे थे।

जाते होश मे सोहराब ने ऊपर देखा और कहा–"इस समय मेरा बाप रूस्तम यहां उपस्थित होता तो मेरी हत्या का बदला अवश्य लेता।"

यह वाक्य सुनकर रूस्तम कांपने लगा। फिर पूछा–कि कौन हो?

सोहराब ने कहा कि मैं सोहराब हूँ, प्रसिद्ध योद्धा रूस्तम का बेटा हूँ।

इतना बोलते ही सोहराब के प्राण उड़ गये।

योद्धा रूस्तम ने अपने योद्धा पुत्र का वध किया अपरिचय के कारण। रामायण और महाभारत की सिरियल हमने देखी। लव कुश नही जानते थे कि वे अपने पिता राम की ही सेना के विरूद्ध संघर्ष कर रहे है। वे नही जानते थे कि वे राम चन्द्र की ही संतान हैं। महाभारत की सिरियल आप ने देखी। भीष्म गये, द्रोण गये, कर्ण को सेनापति बनाया गया। उस समय उसे कहा गया कि तुम नही जानते तुम कुन्ती के पुत्र हो। तुम पहले पाण्डव हो ये पांचों पाण्डव तुम्हारे भाई हैं और तुम अपने ही भाईयो के विरूद्ध युद्ध

में खड़े हो। कर्ण ने कहा अब तो बहुत देर हो गई। पहले पता चलता तो इतिहास बदल जाता। अब वापस लौटना संभव नही। अब जो फैसला होगा वह मैदान में ही होगा।

परिचय न होने के कारण बड़े भाई ने अपने भाईयों के विरूद्ध शस्त्र उठाये। यह परिचय सम्पूर्ण राष्ट्र को करा देने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य चल रहा हैं। इस दृष्टि से हमकों भी समझना चाहिए कि प्रत्येक हिन्दू, संघ को गाली देने वाला हिन्दू भी हमारा स्वयं सेवक है। वह संघ स्थान पर नही आता होगा तो भी वह हमारा सुप्त स्वयं सेवक है। हम भी इस तरह की गलती करते हैं इसका एक उदाहरण देकर मैं अपना यह भाषण समाप्त करूंगा ।

हम हमारे सुप्त स्वयं सेवकों को पहचानने में बहुत बार असफल हो जाते हैं । मैं जानता हूं कि बंगाल में भी हमारे सुप्त स्वयं सेवक बहुत बड़ी संख्या में हैं। हम उनको पहचानते नहीं । उनके पास पहुंचते नहीं । हमें अपनी स्वयं की भूल भी समझना चाहिए। प्रत्यक्ष स्वयंसेवक, शाखा पर आते हैं कार्यक्रम करते हैं दक्ष आरंभ करते हैं।

सुप्त स्वयंसेवक का क्या अर्थ है ?

मुझे एक घटना स्मरण हो रही है । पहले निर्वाचन के बाद भारतीय जनसंघ का अखिल भारतीय अधिवेशन कानपुर के गुरु बाग में हुआ था । दूसरे दिन सुबह माननीय बच्छाराज जी व्यास ने आदतन सूचना दी कि जो जो स्वयं सेवक है वे शाखा पर आ जायें। वहां शाखा लगेगी । गंगा निकट मैदान में शाखा लगी। अधिवेशन में शामिल सभी स्वयंसेवक वहां आ गये। उस रात बहुत वर्षा हुई थी । थोड़ी थोड़ी वर्षा शाखा के समय भी चल रही थी । बच्छाराज जी ने डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ पहले ही बात कर रखी थी कि शाखा के कार्यक्रम में उनको कुछ वक्तव्य (मार्गदर्शन) देना है । हम सब स्वयंसेवकों को आनन्द हुआ कि इतने बड़े अखिल भारतीय राजनैतिक-दल के सर्वभारतीय अध्यक्ष हमारी शाखा पर आयेंगे । हमें उद्‌बोधन करेंगे। हम प्रसन्न थे ।

श्यामा प्रसाद जी आये । ध्वज को वंदन किया जैसे किया जाता है।

और उनका भाषण शुरू हुआ । उसी समय वर्षा भी शुरू हुई। बच्छाराज जी के संकेत के अनुसार एक स्वयंसेवक श्यामाप्रसाद जी पर छाता तानकर खड़ा होने का उपक्रम करने लगा । हम सारे स्वयंसेवक बारिश में बैठे थे, और डाक्टर श्यामा प्रसाद जी खड़े भाषण दे रहे थे । स्वयंसेवक उन पर छाता तान कर खड़ा हुआ । श्यामा प्रसाद जी ने उधर देखा और गुस्से के साथ छाते को झटक कर अलग कर दिया । उन्होंने कहा--सारे स्वयंसेवक वर्षा में बैठे हैं । मैं छाता लूं, क्या मैं स्वयंसेवक नहीं हूं ? क्या आप मुझे स्वयंसेवक नहीं समझते ? हम सबको आश्चर्य हुआ कि हम हमारे सुप्त स्वयंसेवक को अभी तक पहचान नहीं पाये । इस शिविर के पश्चात हमें बंगाल के सभी ऐसे सुप्त स्वयंसेवकों को पहचानने का काम करना चाहिए ।

पिछले दिनों जब मैं यहां आया था तब राम मन्दिर का आन्दोलन (घटनाक्रम) चल रहा था । उस समय एक दृष्टा की बताई हुई बात कह कर अपना भाषण समाप्त करूंगा । उस दृष्टा ने कहा--

ओरे भाई होबे इ होबे
ओरे भाई होबे इ होबे ।
निसी दिन भर वर्षा राजि
ओरे भाई होबे इ होबे ।

घंटा जोखोन उठबि जेगे
देखबि सबाय आसबि नेबे
से जे एकटा यात्री जोतोई
एक ई रास्ता नेबे इ नेबे
ओरे भाई होबे ही होबे ।

एक ही रास्ता--याने वही रास्ता जिस पर हम सब 1925 से निरन्तर चल रहे हैं। उसी राह पर जब लोग पूछें--हम सबको यह रास्ता कहां ले जायेगा ? रास्ते के अंत में क्या है यह पूछेंगे । वे नहीं जानते मगर हम जानते हैं। डाक्टर जी ने पहले से ही बता दिया है कि इस पथ के अन्त में हिन्दू राष्ट्र का परम वैभव खड़ा है । यह श्रद्धा मन में लिए हम सब अपने अपने स्थान पर लौटेंगे ।

भगवा लहर लहरायें
हिन्दू विजय ध्वज जय जग पाये।